

ऋचा

जन्म-तिथि : 1971 ई.

जन्म-स्थान : ग्राम-ढेकवाहा, पो०-पैठाना, जिला-नालन्दा

सिच्छा : स्नातक प्रतिष्ठा (संस्कृत)

पुस्तक : लालसा (कथा संकलन)

हिन्दी-मगही में कहानी, कविता, रिपोर्त्ताज आउ ललित निबंध लिखऽ हथ।

'इँजोर' कहानी मगही अंचल के रहन-सहन, सभ्यता-संस्कृति के निछक्का झलक आउ मगही मट्टी के सुगंध से ओत-प्रोत तो हइए हे। एकरा अलावे ई कहानी में समाज के झकझोरे वला अइसन कथ्य हे, जे पढ़ल-गुनल लड़की के बिआह लेल ओकर बाप के कइसन-कइसन परेसानी आउ तिलक-दहेज ला जे उपेक्षा अपमान होवऽ हे, ओकर जीवन्त चित्र खींचल गेल हे। पढ़ल लड़की जब ससुराल जाहे, तब अप्पन गुन के परिचय देहे। अँधेरा में रहेवाला ससुरारी परिवार के अप्पन ज्ञान आउ व्यक्तित्व के परभाव से इँजोर कर देहे।

इँजोर

पच्छिम में सूरज धीरे-धीरे मोमबत्ती जइसन गल रहल हल आउ एकरे साथ धरती पर साँझ के सुगबुगाहट सुरू हो गेल हल। सूरज जइसहीं अप्पन आखरी किरन समेट के अस्त होयल सांझ अप्पन पैर पसार देलक हल। चहचह करइत चिरईं-चिरगुन्नी अप्पन-अप्पन घोसला में लउटे के आपा-धापी में खूब तेजी से उड़ रहल हल। गाय-गोरू भी अप्पन-अप्पन खूँटा से बंध के भोंकरे लगल हल।

धीरे-धीरे वातावरन में सांति के साम्राज्य फैले लगल हल। काहे कि साँझ के दरवाजा पर रात अप्पन दस्तक दे देलक हल। पूस के कँपकँपावे वला जाड़ा हल। लोग काम-धंधा से निपट के घर में नेहाली तर दुबक गेलन हल। सबके दूरा-दलान

पर ढिबरी-ललटेन जल गेल हल। बूढ़ा-बूढ़ी बोरसी के लह-लह आग आउ हुक्का-चिलिम लेके बइठ गेलन हल। उहाँ दिन भर के थकान से टूटइत सरीर के साथ-साथ बेटा-पुतोह के करतूत से आहत मन अप्पन भड़ास निकाल के अप्पन मन के हलका कर रहलन हल। बच्चा-बुतरू के कटर-मटर, ककहरा-पहाड़ा से दलान गुलजार हो रहल हल। बोरसी के आग मिझा गेल हल। सब बाल-बुतरू अप्पन बोरिया-बस्ता समेट के अप्पन-अप्पन घर दन्ने सोझिया गेलन हल। जाड़ा बढ़ गेल हल । ई चलते लोग सहिये-साँझ घर में दुबक गेलन हल।

चारो तरफ घोर अँधेरा पसर गेल हल। बस झिंगुर के अवाज ही फैलल सन्नाटा के भंग कर रहल हल। दलान पर रक्खल टिमटिमाइत ढिबरी अब भी जल रहल हल। घर के कोना में जग रहलन हल नरायन बाबू । अधरतिया हो रहल हल, मुदा उनकर आँख में दूर-दूर तक नींद के नामो-निसान न हल। कभी ई करवट तो कभी ऊ करवट फटल आँख से ऊ घर के बड़ेरी गिन रहलन हल। कहल जाहे कि पेट भरल रहे आउ मन सांत रहे, तऽ चैन के नींद आवऽ हे। पेट के भूख चाहे मेट भी जाय, मुदा मन सांत न हे तऽ नींद के दूर-दूर तक नामो-निसान न रहे हे। एही बात नरायन बाबू के साथ भी हल। लाख परयास करला पर भी नींद उनकर आँख से कोसो दूर हल, मन एकदम बेचैन हल। मन बेचैन काहे न होयत हल ? बेटी बियाहे के चिन्ता जे सर पर सवार हल। कहाउत भी ठीके कहल गेल हे —'जेकर बेटिया बड़ी हो गेल, ओकर खटिया खड़ी हो गेल'।

कल्हे नरायन बाबू सहर से अप्पन गाँव अयलन हल। सहर के भागम-भाग जिनगी से गाँव में झाँके के फुरसत कहाँ मिलऽ हे, मुदा बेटा-बेटी के बियाह एगो अइसन सवाल हे जेकरा हल करेला बाप-भाई भिर जाहीं पड़ऽ हे। जुआन बेटी के बियाह खातिर नरायन बाबू फिफिहिया हो गेलन हल। जउन अदमी जहाँ-जहाँ लड़का बतावऽ हलन, ऊ उहाँ पहुँच जा हलन। मुदा दरवाजा पर रक्खल धनुस तोड़े वला राम उनका अबतक न मिलल हल। सायद अइसने छन से राजा जनक के भी गुजरे पड़ल हल। तबे तो ऊ बीच स्वयंवर-सभा में कराह के कह उठलन हल—

तजहु मोह निज-निज गृह जाहु
विधि न लिखा बैदेही विवाहु ।।

सताब्दी पर सताब्दी बीतल, अदमी धरती से चाँद पर पहुँच के बसे के तइयारी करे लगल हे, परिवर्तन के आँधी दुनिया के कहाँ से कहाँ पहुँचा देलक, मुदा बदलाव

न आयल तो बेटी के बियाह में। कल जहाँ राजा जनक राजा होके भी विवस आउ लचार खड़ा हलन, आज हर बेटी के बाप राजा जनक बनके खड़ा हथन। पढ़ल-गुनल बेटी रहे के बाद भी नरायन बाबू ओही परेसानी से गुजर रहलन हल। एगो लोकगीत के पंक्ति उनकर मन में रह-रहके उमड़-घुमड़ जा हल—

पूरब खोजलियो बेटी पच्छिम खोजलियो,
हमर धिया के जोगे वर नहिं मिलल,
अब धिया रहतन कुमार ।

एही सब विचार में ऊब-डूब होके नींद के आगोस में समा गेलन हल। पूरब में लाली धपे लगल हल। सूरज के किरन जइसहीं धरती के चुमलक, धरती पर जिनगी के हलचल सुरू हो गेल। एक तो अधेड़ उमर, थकल-माँदल सरीर, ऊपर से बेटी बियाहे के चिन्ता, जेकरा से कोई भी बाप-भाई समय से पहिले बूढ़ा-बूढ़ी नजर आवे लगऽ हथन।

नरायन बाबू थकान के मारल खटिया से उठे के परयास कर रहलन हल। नहा-धोके तइयार होके अप्पन बड़ भाई के साथे आज फिर एगो लड़का देखे ऊ जा रहलन हल । छात्रवास में रखके अप्पन बेटी के पढ़इलन हल । रूपा के मैट्रिक पास होते घर के बड़-बुजुर्ग बियाहेला कहे लगलन हल। बाकि नरायण बाबू अप्पन बेटी के उँचा सिच्छा दिलावे ला अड़ गेलन हल। हलाँकि उनकर आर्थिक हालत ई लायक न हल। मुदा बेटी के ऊँचा सिच्छा दिलावे के हसरत उनकर मन में बड़ी हल। घर के चारो बाल-बच्चा के ऊँचगर सिच्छा दिलावे में कोई कसर न छोड़लन हल। एही त्याग के परिनाम हल कि आज उनकर बेटा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हल आउ बेटी वीमेंस कॉलेज से ग्रेजुएट करके निकल रहल हल।

रूपा के बी.ए.पास कैला पर चारो कोना के देवी-देवता के दूध-बतासा चढ़ा के पुजलन हल। उनकर इच्छा के पूर्ति जे भेल हल। हलाँकि बेटी के जादे पढ़ावे ला उनका अप्पन पत्नी से अक्सर कहा-सुनी हो जा हल। उनकर पत्नी ई विचारधारा के एमदम उल्टा हलन, तइयो ऊ अप्पन पत्नी के समझावइत कहऽ हलन —'तूँ बेटी के बियाह के चिन्ता काहे कर रहलऽ हे। पढ़ल-गुनल बेटी ला तो एक से एक लड़का आउ परिवार मिलत। एगो सिच्छित लड़की से एगो परिवार सिच्छित होवऽ हे। परिवार से एगो सिच्छित समाज के निरमान होवऽ हे। एगो सिच्छित समाज से सिच्छित देस के निरमान होवऽ हे।'

मुदा लड़का खोजे में आज उनका कउन परेसानी से गुजरे पड़ रहल हल। घर-बाहर से बातो सुने पड़ रहल हल, जहाँ उनकर हिम्मत जवाब देवे लगल हल। मुँह के सामने लोग कहे लगलन हल—'न बेटी के एतना पढ़यतऽ हल, न बियाह में एतना पेरसानी होतो हल।'

पढ़ल-लिखल बेटी के कोई कदर न हल। लड़का के बाप दहेज ला सुरसा जइसन मुँह फाड़ले खड़ा मिलऽ हल। लोग के बात आउ दहेज के माँग उनका काँटा जइसन चुभ रहल हल। मुदा देर हे अन्धेर न हे, एही सोच के ऊ सबूरी कर ले हलन। कोई कवि के ई कविता गुनगुना के ऊ अप्पन मन के समझा ले हलन :—

भय से मत घबराना, अगर बादल हो घनेरा,
किसके रोके रुका है सवेरा,
रात जितनी ही संगीन होगी,
सुबह उतनी ही रंगीन होगी।

आखिर कुहासा कबतक रहल हे, सूरज के किरन ओकरा चीर के निकलहीं जाहे। नरायन बाबू के भी समस्या के समाधान हो गेल । एगो मुखियाइन अप्पन पड़ोस के ही पढ़ल-लिखल सुंदर-सुसील लड़का के पता देलन हल। लड़का के बाप बेटी के बियाह के भारी बना दे हथन। ऊ अप्पन बेटा के जनम से लेके पढ़ावे-लिखावे आउ बियाहल घर बसावे के खरचा तक बेटी के बाप से दहेज में माँगे लगऽ हथन। खैर, रूपा के सादी राजेस से तय हो गेल। अप्पन औकात से बढ़के दान दहेज देवे के बात ऊ कर अइलन हल। लड़का आउ घर-परिवार के बारे में पत्नी के पुछला पर ऊ कहलन हल—

बिना दहेज के बेटी से गेठी जोड़े न कोई
दुअरा पर रखल धनुहिया तोड़े न कोई
घरवा पर हे जेकर छप्पर न छानी
सावन-भदोइया में टप-टप टपकऽ हइ पानी
ओहु माँगऽ हे डाला भर सोना, डाल भर रुपइया
हाय राम आ गेलो कइसन समइया।

दरवाजा पर बरात लगाके कमलेस बाबू नरायन बाबू से समधी-मिलन कर लेलन हल। राजेस दुल्हा बनके मड़वा में बइठ गेलन हल। बियाह गीत से चारो दिसा गूँजे लगल हल—

कुइआँ खँदली आउ बेटी बियाहली
तनिको न कइली विचार,
पोथी बनइते ब्राह्मण काँपलन
काँपी गेलन कुल परिवार,
अब धिया पराया घर जइतन
अब भेलन पर के आस ।

मुदा मंगल गीत ऊ घड़ी मातम में बदल गेल हल, जब पता चलल हल कि मोटर साइकिल आउ रंगीन टी०वी० लेले बिना ऊ लड़की के बिदाई न करावे पर अड़ गेलन हे। बीच मड़वा में अप्पन धोती के खूँट सम्हालइत कमलेस बाबू तन के एलान कैलन हल। बात-बात पर भाई-बाप से लड़े-झगड़े वला बेटा आज आज्ञाकारी बेटा बनके बाप के पीठ के पीछे खड़ा हल। मण्डप में सन्नाटा छा गेल हल। नरायन बाबू सामने आयल ई परेसानी से हक्का-बक्का हलन। उनका कोई उपाय न सूझ रहल हल। उनकर बोलती बन्द होल हल।

पढ़ल-लिखल जउन लड़का के बड़ी नाज से रूपा वरमाला पेन्हयलक हल, अब ओकर ई व्यवहार से रूपा के मन कराह गेल हल। औरत के ही रनचंडी, काली, दुरगा, सीता आउ सावित्री कहल गेल हे। सबसे बड़ बात कि मरद के ताकत औरत के ही कहल गेल हे। तिनका के सहारा लेके सीता रावण से अप्पन अस्मिता के रक्षा कर लेलन, कृष्ण के पुकार करके भरल सभा में द्रौपदी अप्पन चीर हरन होवे से बचा लेलन, बीच रन में टूटल रथ में अपने अंगुली के कील बनाके कैकेई राजा दशरथ के जीता देलन हल, तऽ नरायन बाबू के पत्नी सीता भी पीछे रहेवाली कहाँ हलन। अप्पन पति के लचार, विवस देख के नरायन बाबू के पत्नी आगे चल अयलन। बहूभोज के दिन गाड़ी आउ टी०वी० देवे के वादा करके ऊ अप्पन सँजोगल पूँजी अप्पन बेटी के बिदाई करेला कहलन हल। बड़ी कहा-सुनी के बाद बिदाई के रसम होयल हल। वादा के मोताबिक सीता अप्पन सरीर के एक-एक गहना बेच के उधार-पइँचा लेके समधी के माँग पूरा कर देलन हल।

बियाह-सादी के बाद दहेज पर चरचा करइत रूपा राजेस के कहलक—'तोरा जइसन पढ़ल-लिखल लड़का के दहेज माँगना सोभा देहे ?'

राजेस मजाक करइत कहलन—'बाबू सतरह दुआरी घूम अइलथुन हल, तइयो तूँ हमरे ला बइठल हलऽ।' फिर तनी भावुक होइत रूपा के चेहरा अप्पन हाथ में लेके

कहलन—'एगो हमरा दहेज न लेवे से दहेज-प्रथा खतम हो जतइ ? एगो दीया जले से कहीं अँधेरा मिटऽ हे, इँजोर होवऽ हे ?

रूपा राजेस के जवाब देइत कहलक—'एक-एक दीया के जले से ही तो अनेको दीया जलऽ हे। तब जाके दिवाली होवऽ हे। रोसनी से दुनिया नेहा जाहे, जगमगा जाहे। तूँ एक कदम बढ़ाके तो देखऽ, जमाना हमरा साथ हे। आज तूँ मान लेबऽ, कल परिवार मान जयथुन। फिर टोला-टाटी, गाँव जेवार आउ दुनिया में सब कोई दहेज के खिलाफ अवाज उठयतन। एक दिन अइसन आवत जब सउँसे संसार में अज्ञान के अँधेरिया छँटत आउ ज्ञान के इँजोरिया फैल जायत। समझलऽ ?'

'हँऽ जी ! बिल्कुल समझ गेली । आज से हम दहेज के खिलाफ कमर कस लेही। बाबूजी केतनो कोसिस करतन, बाकि हम किरिया खाइत ही कि हम्मर दुन्नो छोट भाई के बिआह में दहेज न लेवल जायत।'

अभ्यास-पाठ

मौखिक :

1. (क) 'सूरज धीरे-धीरे मोमबती जइसन गल रहल हल'—ई वाक्य के माध्यम से कहानीकार का कहेला चाह रहल हे ?
   (ख) धरती पर अन्धेरा पसर गेला पर कइसन दिरिस देखावल गेल हे ? बतावऽ ।
   (ग) नारायन बाबू के सामने कउन समस्या आ गेल हे जेकरा से ऊ परेसान हथ।
   (घ) 'आखिर कुहासा कब तक रहल हे, सूरज के किरन ओकरा चीर के निकलहीं जाहे'—ई वाक्य से कउन भाव के समझावले गेल हे ? स्पस्ट करऽ।
   (ङ) 'हाय राम आ गेलो कइसन समइया' के माध्यम से का मतलब निकलऽ हे ।
   (च) ई कहानी तोरा पर कउन छाप छोड़ रहल हे ? समझा के बतावऽ ।

लिखित :

1. कहानीकार ऋचा के परिचय चार वाक्य में देवल जाय ।
2. 'इँजोर' कहानी से का सनेस मिल हे ?

3. नायिका रूपा के चरित्र-चित्रन करऽ !
4. ई कहानी के नायक कउन हे ? ओकर चरित्र के बिसेसता बतावऽ !
5. बेटी के बियाह में कउन-कउन परेसानी होवऽ हे ?
6. सादी होला पर रूपा जब ससुराल जाहे, तब अप्पन पति से दहेज के बारे में का कहऽ हे ?
7. बियाह करइत घड़ी दुलहा पक्ष के लोग काहे ला रुस गेलन हल ?
8. कहानी के सीर्सक 'इँजोर' काहे देल गेल हे ?
9. कहानी सिल्प के आधार पर ई कहानी के कसउटी पर कसऽ।
10. दहेज के समस्या तूँ कइसे दूर कर सकऽ हऽ ? तीन गो उपाय बतावऽ।
11. सप्रसंग व्याख्या करऽ :—

हर बेटी के बाप राजा जनक बनके खड़ा हथन। पढ़ल-गुनल बेटी रहला के बाद भी नरायन बाबू आज ओही परेसानी से गुजर रहलन हे ।

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से पाँच गो सहचर–सब्द लिखऽ ।
2. पाँच गो मुहावरा चुनके अर्थ बतावइत वाक्य में प्रयोग करऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. कहानी के बीच में कविता आउ गीत देवल गेल हे। तोर विचार से ई कहाँ तक ठीक हे ?
2. नारी उत्थान से संबंधित कोई कहानी लिखऽ इया कहुँ से लाके किलास में सुनावऽ।
3. 'दहेज लेना-देना दुन्नो अपराध हे'—एकरा पर विद्यालय में एगो गोस्ठी के आयोजन करऽ !

सब्दार्थ :

आखरी	—	अंतिम
घोसला	—	खोंता
आपाधापी	—	दौड़-धूप
दस्तक	—	अवाज
बोरसी	—	टपोड़ी
मिंझा गेल	—	बुत गेल
अस्मिता	—	इज्जत



संत रामसनेही दास



संत रामसनेही दास के जनम औरंगाबाद के भरकुंडा नाम के गाँव में भेल हल। इनकर पद में हठयोग के तत्व के उल्लेख मिलऽ हे। ई कबीर के बतावल मार्ग पर साधना करऽ हलन। ई निरगुन पंथी हलन। निरच्छर होला पर भी नया-नया पद बनावऽ हलन। ई भक्तिकालीन कवि हलन । इनकर दू-तीन पद परकास में आयल जेकरा से इनकर साधना के मरम जाने में कुछ सहायता मिलऽ हे ।

मगही पढ़ेवाला छात्र के भक्तिकालीन कवि से परिचय कराना जरूरी हे । ई पाठ में हठयोग आउ रहस्यवाद के झलकी मिलऽ हे। सूरति, निरति, गंगा, जमुना, इंगला, पिंगला, सुखमन आदि के परयोग मिलऽ हे जेकर अर्थ प्रतीकात्मक होवऽ हे ।

कवि के जीवन में साधना न करे के अफसोस हे। अब तो उनकर जीवन के अन्तिम समय आ गेल हे। एही से ऊ कह रहलन हे कि सूरत परम ब्रह्म परमेस्वर से नेह न लगयलन जेकर उनका बहुत अफसोस हे ।

चले के बेरा कछु जनली न गे सजनी

चले के बेरा कछु जनली न गे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

दिन-रात खाइ के अचेत रहली सजनी,
चढ़त जवानी मस्तानी में बितउली ।

देख के बुढ़ारी रोआइ आवे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

सूरत से नेह न लगउली गे सजनी,
एही रे देहिया में सिवजी बसल हथ ।

गंगा आ जुमना के धार बहे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

कहत सनेही राम संतन के दास हथ,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) निरगुन पंथ का हे ?
   (ख) रामसनेही दास कउन काल के कवि हलन ?
   (ग) रहस्यवाद का हे ?
   (घ) सूरत के माने इहाँ का हे ?
   (ङ) बुढ़ारी देख के कवि के रोआइ काहे अयलक ?

लिखित :

1. (क) संत रामसेनही दास के परिचय दऽ ?
   (ख) 'चले के बेरा' से का समझऽ हऽ ?
   (ग) अचेत रहे के का भाव हे ?
   (घ) सूरत से नेह कवि काहे न लगउलक ?
   (ङ) 'सजनी' के का अर्थ हे ? कवि ई सबद के बार-बार परयोग काहे कइलक हे ?
2. नीचे लिखल पद के व्याख्या करऽ :

   दिन-रात खाइ के अचेत रहली सजनी,
   चढ़त जवानी मस्तानी में बितउली ।

देख के बुढ़ारी रोआइ आवे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

3. भावार्थ लिखऽ :

एही रे देहिया में सिवजी बसल हथ,
गंगा आ जमुना के धार बहे सजनी ।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे कविता के कुछ पंक्ति देल गेल हे जेकरा में छूटल पंक्ति के लिखऽ :

सूरत से नेह न .....

.....बसल हथ

2. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ बतावऽ :

(क) धार बहना

(ख) अचेत रहना

(ग) बुढ़ारी में रोना

(घ) नेह न लगाना

3. नीचे लिखल पद के सिल्प-सौन्दर्य बतावऽ ।

दिन-रात खाइ के अचेत रहली सजनी,
चढ़ल जवानी मस्तानी में बितउली ।
देख के बुढ़ारी रोआइ आवे सजनी,
सूरत से नेह न लगउली गे सजनी ।

योग्यता-विस्तार :

1. ई पद के भाव से मिलइत कोई अन्य संत कवि के पद के चार पंक्ति लिखऽ ।
2. पाठ के अन्तिम दू पंक्ति में इस्तेमाल होयल अलंकार के नाम बतावऽ ।

(क) स्लेस (ख) अनुप्रास (ग) उत्प्रेक्षा ।

3. गंगा-जमुना केकर प्रतीक हे ?

4. पाठ से दू गो सहचर सबद बतावऽ ।

5. नीचे लिखल सबद के विपरीतार्थक सबद बतावऽ ।

(क) संत (ख) जवानी (ग) दास (घ) अचेत ।

6. संत रामसनेही दास के पद के अधार पर आतमा, परमात्मा के बीच सम्बन्ध बतावऽ ।

7. कवि के विचार से तू कहाँ तक सहमत हऽ ?

सब्दार्थ :

कछु	—	कुछ
बेरा	—	समय
सजनी	—	आत्मा के प्रतीक
सूरत	—	परमात्मा
नेह	—	परेम
लगउली	—	लगा लेली
दिन-रात	—	हर समय
अचेत	—	बेखबर
जवानी	—	जुवा अवस्था
बुढ़ारी	—	जिनगी के चौथापन
बितउली	—	बिता-लेली
रोआइ	—	रोना
देह	—	सरीर
सिवजी	—	कल्यानकारी (हिन्दू के एगो देवता)

●●●

कृष्णदेव प्रसाद



कृष्णदेव प्रसाद के जनम पटना सिटी के कमंगर, गली में 27 जून 1892 गें भेल हल। ई 1914 में एम.ए.आउ 1915 में बी०एल० कयलन। 14 नवम्बर 1954 में इनकर निधन भेल। इनका में समाज सुधार के भावना कूट-कूट के भरल हल। सरल-गलल रीति-रिवाज, कुप्रथा, चाल-चलन बदले वास्ते कई एक कविता लिखलन, जेकरा में व्यंग्य, चोट आउ रीति-रिवाज पर कड़ा परहार कइलन हे। 'बाँचि ले मोर पतिया' इनकर कविता संग्रह हे। 'चाँद' आउ 'जगउनी' कविता इनकर प्रतिनिधि कविता हे जे 1943 में पटना विश्वविद्यालय के इंटर सिलेबस में सामिल हल।

कृष्णदेव प्रसाद प्रकृति के जबरदस्त चितेरा हथ। प्रस्तुत फागुन कविता में फागुन के बेहतरीन चित्रण भेल हे। फागुन के ऐला पर सउँसे प्रकृति में मनमोहक छवि छलके लगऽ हे। देखके सबके मन मोहा जाहे।

फागुन

आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास।
पाते-पाते अमवा झबरइ मँजरिया,
कार तरु डरिया परास;
सिमरक लाल-लाल लल्हुआ सुहावन,
महुअक पसरइ सुवास।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास।।

सिरिस तागे-तागे फुलवा बसन्ती,
गुल-गुल कोमल विकास;
खेतवा में रबिअक छबिया छबीली,
बढ़वइ हियरा हुलास।

आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।
रहिया खुल-खुल बिहुँसे असोकवा,
मोहे मन बिनुहि परयास;
बगिया काँटे-काँटे फुललइ गुलबवा,
सब तरु करइ हहास।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।

बड़वो पिपड़वक कहलो न जा हइ,
पोकहा मंजरि टटहास;
कउआ-डेढ़कउआ चिल्ह ठनके,
रहि-रहि करे अटहास।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।

तरु-तरु डाढ़े-डाढ़े चहके चिरइयाँ,
खाइ खेलि करइ विलास;
थिरकऽ हइ रहि-रहि के सुखद पवनमा,
रहि-रहि भरइ उसाँस।
आइ गेलइ मास फगुनवा, निरमल स्वच्छ अकास ।।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) फागुन महीना में अकास कइसन लगऽ हे ?
   (ख) फागुन महीना में आम आउ सेमर बिरिछ के रूप कइसन हो जाहे ?
   (ग) खेत-खरिहान के दिरिस राह-बटोही के कइसे परभावित करऽ हे ?
   (घ) बाग-बगइचा आउ चिरँई-चुरगी फागुन के अवइते काहे आन्द में डूब जा हथ ?

लिखित :

1. (क) नीचे लिखल पंक्ति के भाव लिखऽ :

रहिया खुल-खुल बिहुँसे असोकवा
मोहे मन बिनुहि परयास
बगिया काँटे-काँटे फुललइ गुलबवा
सब तरु करइ हहास

(ख) नीचे लिखल पँक्ति के व्याख्या करऽ :

तरु-तरु, डाढ़े-डाढ़े चहके चिरइयाँ,
खाइ खेलि करइ विलास;
थिरकऽ हइ रहि-रहि के सुखद पवनमा,
रहि-रहि भरइ उसाँस।

भासा-अध्ययन :

1. (क) फागुन कविता में इस्तेमाल सिल्प-सौन्दर्य के वरनन करऽ ।
   (ख) अप्पन समझ से फागुन मास के प्रकृति-चित्रन करऽ ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) फागुन मास पर अधारित कोई दूसर कवि के कविता के आठ पंक्ति लिखऽ ।
   (ख) सुवास : महुआ के सुवास सगरो पसर गेल। एही तरह से नीचे लिखल सबद से सार्थक वाक्य बनावऽ :
   निरमल, सुहावन, स्वच्छ, बसन्ती, छबीली, हुलास, हहास, अटहास, विलास, उसाँस ।

सब्दार्थ :

निरमल	—	साफ
स्वच्छ	—	साफ
अकास	—	असमान
कार	—	करिया
तरु	—	पेड़, दरखत
सिमरक	—	सेमर
लल्हुआ	—	कलि
सुवास	—	सुगंध
हुलास	—	खुसी
बिहुँसे	—	खिले, हँसे
हहास	—	तेज हवा
मंजरी	—	मोजर
अटहास	—	जोरदार हँसी, ठहाका ।



●●●

श्रीनन्दन शास्त्री

कवि श्रीनन्दन शास्त्री के जनम मुँगेर जिला के नंदनामा गाँव में अगस्त 1914 में होल हल। अब ई लखीसराय जिला में हे। क्रान्तिकारी होवे के चलते ई देस के अजाद करावेला अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़लन । इनकर कविता में समाजिक चित्रन के साथ-साथ यथार्थ के चित्रन भी मिलऽ हे। इनकर कविता में लोक मंगल आउ विस्व-बंधुत्व के भावना हे। 1938 में हिन्दी कविता संगरह **'क्रांति के भट्ठी'**, 1939 में **'क्रांति के बिगुल'**, 1941 में **'किसान पुकार'** छपल। 1946 में मगही कविता संगरह **'अप्पन गीत'** परकासित भेल। 1959 से 1965 तक ई डिग्री कॉलेज लखीसराय मुँगेर में हिन्दी प्रवक्ता बनलन।

ई कविता में अकाल के भयावह दिरीस देखावल गेल हे। जीव-जंतु, पसु-पंछी, खेत-बधार सब के जिनगी संकट में फँसल हे । तरह-तरह के बिम्ब-प्रतीक के माध्यम से जे चित्रन कयल गेल हे, ऊ दिल-दिमाग के झकझोर देहे।

महाअकाल-गीत

भींजल हौ सखि, मोर अँखिया !!
गरदा से लेटल अकास हौ, तरेगना उदास हौ
भींजल हौ सखि, मोर अँखिया
आगे, अदरोके बदरा कठोर, सुनौ नै कुछ मोर
मानौ नै सखि मोर बतिया

[1]

बड़-बड़ टिल्हवन के पगड़ि उजड़ि गैलौ
अरियन के जरि गेलौ माँग गे
जुलुमी दुसासनो से सावन के जुलुम जादा
नगन होइतो अब भैया गांग गे
नदियन नहरियन कियारी; उघारे बिना साड़ी

देखलौ नाहि जाहौ अँखिया
गरदा.....

[2]

ऊँचे-ऊँचे पहड़न के कंधवन झूमेवाली
गछियन नगन बिना पात गे
गछियन के देहिया में सती जैसन लिपटल
लतिया जरलौ संगे साथ गे
विकल हौ हरिनियाँ समाज हौ पियासल आज
देखैतै सखिया फाटौ छतिया
गरदा.....

[3]

पानी बिना बगियन कोयलियन के कंठ बंद
मोरनी के मुरझन हौ पाँख गे
सुखल तलैयन में अभागिनी पुरैनियन के
सुखि गैलौ लाले-लाले आँख गे
दादुर के दुनिया उजार भैलौ, मछली संहार भैलौ
बंद भैलौ झिंगुर गितिया
गरदा.....

[4]

आववा के देह जैसन धरती के देह धीपल
दगनी के देहिया सन राह गे
इंजन के भाफ जैसन ऊ छक-छक लागे सखि
बगिया के हौंकल बयार गे
तैयो न हिम्मत हटावै हलियो
गँदौरा उठावै हलिओ
भरि-भरि माथे खँचिया
गरदा.....

[5]

हल आउ कुदाली लेले, माथे से बिड़रिया के
मँगिया सजौलिऔ दिन-रात गे
अँखियन के मोती नित अँचरा पै झारै हलिओ
देखेले तनिक बरसात गे
जखराज दुधवा चढ़ावै हलिऔ
काली मनावै हलिऔ
बाँधि-बाँधि कारी पठिया
गरदा.....

[6]

एकतो बैरिन सखि, सूरज के आगि हलौ
दूसरे तरेगन भरल रात गे
तीसर बैरिन ऐलौ ई सावनी पुरवैया सखि
छिनैलै कटोरवा के भात गे
कानैतै बुतरू मनावै पड़तौ
भूखलै सुतावै पड़तौ
कहि-कहि झूठ बतिया
गरदा.....

[7]

सुरसा के मुँह जैसन, करजा के मुँह होइतै
पहड़ो से भारी परिवार गे
छने-छने मथवा में एटम के फोट होइतै
देखि-देखि बेटिया कुमार गे
गौंढ़ा खेत हटावै पड़तौ
जेबर भेजावे पड़तौ
बेचे पड़तौ लोटा-थरिया
गरदा.....

[8]

कंठ में प्यास हौ सखि,
पेट-कंठ में भूख हौ बसल
घर-घर बसल हाहाकार गे
खेतवा के छतिया पर
भीसन अकाल हौ बसल
कुइआँ के पेट में दरार गे
जीवन राह अँधार हौ बसल
आँखि बाढ़ हौ बसल
मथवा पर साढ़े सतिया
गरदा.....

[9]

केकरा देखैओ सखि अप्पन दुर्गतिया ई
सुनतौ के बिपतल के हाँक गे
दुनिया के आँख एखन पत्थल के आँख सखि
कान दूनो भीत के सुराख गे
ऐलौ समैया बिनास के सखि
लिखिऔ कौन बतिया !
गरदा.....

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) अकाल केकरा कहल जाहे ?

(ख) पानी के बिना केकर-केकर हालत खराब हे ?

(ग) करजा के मुँह केकरा लेखा बतावल गेल हे ?

(घ) जेबर काहे भेजावे पड़तै ?

(ग) 'आँख में बाढ़ बसल हे' के मतलब का हे ?

लिखित :

1. 'महाअकाल-गीत' के पहिला पद में कवि कउन चीज के बरनन कइलक हे ?
2. महाअकाल के समय परकिरती के दिरिस कइसन हो जा हे ?
3. महाअकाल गीत के तीसरा पद में जउन पीड़ा आउ टीस के बतावल गेल हे ओकरा अप्पन भासा में लिखऽ ।
4. चौथा पद में धरती आउ जीव जंतु के स्थिति कइसन हो जाहे ?
5. अकाल पड़ला पर किसान के आँगू कउन दुख-दरद उपस्थित हो जाहे ?
6. कवि छट्ठा पद में केकरा-केकरा बैरिन बतउलक हे ?
7. सतवाँ पद के मोताबिक कवि अकाल के कउन रूप बतउलक हे ?
8. कंठ में पियास, पेट में भूख, घर में हहाकार, राह में अन्हार, आँख में बाढ़ के भाव समझावऽ ।
9. कवि अकाल के विनास के रूप में काहे बतउलक हे ?.
11. पद में आयल सिल्प-सौन्दर्य के बरनन करऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) कविता में कवि कउन छंद आउ अलंकार के परयोग भेलक हे ?

   (ख) कवि के बिम्ब आउ प्रतीक से तू कहाँ तक सहमत हऽ ?
2. (ञ) 'गछियन के देहिया में सती जैसन लिपटल लतिया जरलौ संगे साथ गे' ई पंक्ति के माध्यम से कवि का कहेला चाह रहल हे ? आज ई परथा काहे न हे ?

   (ख) अकाल पर एगो दोसर कविता सुनावऽ।

सब्दार्थ :

लेटल	—	गंदा
गरदा	—	धूरी
अदरोके	—	अदरा नछत्तर
जुलुमी	—	अत्याचारी

संहार — नास

धीपल — तातल

विकल — बेयाकुल

खँचिया — मउनी, टोकरी

गौंढ़ा — गाँव के नगीच खेत

●●●



केसरी कुमार



केसरी कुमार के जनम 7 फरवरी 1917 में पटना जिला के सैदनपुर गाँव में भेल। 1942 में ई पटना विस्वविद्यालय से एम.ए. कइलन । मगध विस्वविद्यालय (1974), पटना विस्वविद्यालय (1975) में हिन्दी के विभागाध्यक्ष पद के सुसोभित करित ई 1980 में सेवा से रिटायर भेलन। ई प्रपद्यवाद (नकेन) के सदस्य हलन । अब ई दुनिया में न हथ ।

केसरी कुमार मगही में आधुनिक कविता के सूत्रधार हलन। आस-पास के बिम्ब के माध्यम से ई साँझ के कई गो चित्र खिंचलन हे जेकरा में समकालीन जिनगी के यथार्थ सामने आ जा हे।

साँझ

न,
साँझ एक असभ्य अदमी के
जम्हाई हे,
जे भरल सभा में
आँख मीच ले हे,
नस सोझ करे-ला
नंगा बाँह के
तना अइसन उपरे उठा के
नीड़न के भुक्खल उद्ग्रीव
सावक अइसन अँगुरियन के
चटखावऽ हे—
टूट्-टूट !

न,
साँझ एगो सरीर लड़की हे
जे लिखल पन्ना के तितली उड़ावऽ हे
बादर-सैली में,
कलम के माथा से 'वुड कट' बनावऽ हे
आउ रन्ना से निकसल
लाल आँखन के देख
धुरिआयल फराक में मुँह लुका के
रोवे लगऽ हे

न,
साँझ
एक रद्दी सियाही-सोख हे
जे कार मूल पर लाल संसोधन के
आ लाल संसोधन पर कार मूल के
उल्टा लेवऽ हे काकपद समेत
आ समन्वय के द्वंद में
खुद बेकाम हो जा हे

न,
हम मरे के मनोदसा में
न
ही।

किरन होयत
अभी गोलार्द्ध पर
गिरिश्रृंग पर,
कंचनजंघा पर,

आसपास
पच्छिम पीछे
रामगिरि पर हस्तीव

न,
हम मरे के मनोदसा में
न ही ।

नाच शंकर
नाच कै—
लास पर

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'साँझ' के एगो असभ्य आदमी के जम्हाई काहे कहल गेल हे ?
   (ख) साँझ के लड़की काहे कहल गेल हे ?
   (ग) साँझ के रद्दी सियाही-सोख काहे बतावल गेल हे ?
   (घ) कवि के मनोदसा कइसन हे ?

लिखित :

1. साहित्य में मानवीकरण से का समझऽ हऽ ?
2. साँझ कविता में मानवीकरण कउन रूप में प्रस्तुत कैल गेल हे ?
3. साँझ कविता में केसरी कुमार के सिल्प-कला के बारें में लिखऽ ?
4. साँझ कविता में कवि साँझ के तुलना कउन-कउन चीज से कइलक हे ?

5. नीचे लिखल पंक्ति के आसय लिखऽ :—

साँझ एगो सरीर लड़की हे
जे लिखल पन्ना के तितली उड़ावऽ हे
बादर सैली में, कलम के माथा से
वुड-कट बनावऽ हे
आउ रन्ना से निकसल
लाल आँखन के देख
धुरिआयल फराक में मुँह लुका के रोवे लगऽ हे ।

6. ई कविता में जउन अलंकार, बिम्ब आउ प्रतीक योजना के परयोग कयल गेल हे, ओकरा से तू कहाँ तक सहमत हऽ ?

7. नीचे लिखल पंक्ति के व्याख्या करऽ :

'साँझ एक असभ्य अदमी के
जम्हाई हे जे भरल सभा में
आँख मीच ले हे'।

8. साँझ के बरनन जे कइल गेल हे ओकर अधार पर तोर मनोदसा पर का परभाव पड़ऽ हे ?

9. साँझ के बरनन में जउन-जउन तत्व के मदद लेल गेल हे, ओकरा में शृंगार रस के झलक कहाँ दिखाई पड़ऽ हे?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल के समास विग्रह करऽ आउ समास के नाम बतावऽ:
धुरिआयल, काकपद, बेकाम, मनोदसा, आसपास, रामगिरि ।

योग्यता-विस्तार :

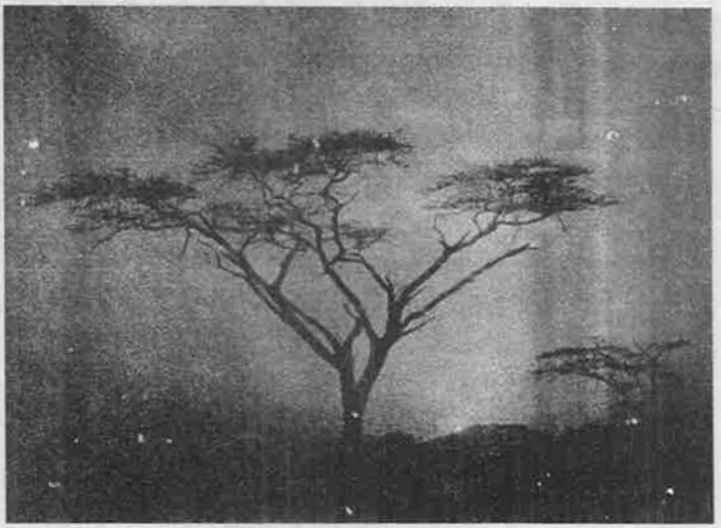
1. (क) अप्पन समझ से साँझ के एगो सुन्दर चित्र खिंचऽ ।

(ख) साँझ संबंधी दू कविता के संगरह करऽ ।

सब्दार्थ :

समन्वय	—	मिलल-जुलल
द्वन्द	—	संघर्स
संसोधन	—	सुधार
गिरीश्रृंग	—	पर्वत चोटी
मनोदसा	—	मन के स्थिति
नीड़न	—	घोंसला, खोंता
उडकट	—	लकड़ी से बनावल चित्र

●●●





श्रीकांत शास्त्री

श्रीकांत शास्त्री के जनम नालंदा जिला के नारायनपुर (एकंगरसराय) में 8 फरवरी 1923 के होल हल। अप्पन मगही गीत के स्वर माधुर्य आउ रूप माधुर्य के माध्यम से श्रीकांत शास्त्री पाठक आउ श्रोता के विमुग्ध कर दे हथ। ई नया भारत के निरमान ला तत्कालीन रचनात्मक विकास संबंधी सटीक उद्‌बोधन गीत लिखलन हे ।

एही से इनकर कृष्ण अगर वंसी बजावऽ हे तऽ अप्पन कर्मयोग के सफलता पर हर्स-विभोर होके, न कि अप्पन एकांत प्रेमसाधना पर नितांत निमग्न हो के । **'पाँच टुक बँसुरिया'** कविता में कवि पंचवर्सीय योजना के सूत्र संचालक के ही कान्हा मान लेलक हे। ई कविता में कवि ब्रज लोक संस्कृति के साथ-साथ मगध के लोक संस्कृति के विसिस्टता के भी अप्पन प्रांजल भासा में अछुन्न रखे के परयत्न कइलक हे।

पाँच टुक बँसुरिया

नेह के नगरिया में कुच-कुच अँधरिया में
बजवइ विकास कान्हा पाँच टुक बँसुरिया ।
जोजना मुरलिया ।।

लहसि-बिहसि कान्हा कनखि से विहँसि बूझइ,
बारी मोर रधिया अंग न उपाय सूझइ ।

कसकल करेजवा आउ मसकल मरमिया,
उड़लइ कपूर लेखा कुल के धरमिया ।
दूध–नियर दपि गेल, लती अइसन लपि गेल,
कँपि–गेल जइसे कँपइ माँजा खा मछरिया ।
बीच रे लहरिया ।

नेहिया॰ के मधुआ से कान्हा उमसल,
भौंहा से विहसि-हँसी रसे-रसे रसलल।
हमतो रचब रास तोरे विलास संघे,
गाँव के गोखुला में सबके दुहरिया।
सब के दोचरिया।।

रधिआ बिजुरिया बजावऽ हइ बँसुरिया,
सोरह हजार नाचइ गाँव रे गुजरिया।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) इहाँ नेह के नगरिया केकरा कहल गेल हैं ?
   (ख) कुच-कुच अन्हरिया के मतलब का हे ?
   (ग) 'बीच लहरिया' के अरथ बतावऽ।
   (घ) गाँव के तुलना केकरा से कयल गेल हे ?
   (ङ) 'पाँच टुक बँसुरिया' सीर्सक तोरा समझ से कहाँ तक सही हे ?

लिखित :

1. श्रीकांत शास्त्री के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. नीचे लिखल काव्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ।
   (क) नेह के नगरिया में कुच-कुच अँधरिया में
   बजवइ विकास-कान्हा पाँच टुक बँसुरिया,
   जोजना मुरलिया।
   (ख) नेहिया के मधुआ से कान्हा उमसल
   भौंहा से बिहँसि-हँसी रसे-रसे रसलल,
   हम तो रचब रास तोरे विलास संघे
   गाँव के गोखुला में सब के दुहरिया
   सबके दोचरिया।

3. पठित पाठ के अधार पर परेम के तत्व पर परकास डालऽ ?
4. राधा आउ बाँसुरी के बीच का संबंध हे ?
5. कविता में आयल बिम्ब आउ प्रतीक से तू कहाँ तक परभावित हऽ, वर्णन करऽ ?

भासा-अध्ययन :

1. ई कविता में कउन रस के प्रधानता हे, ओकरा चार वाक्य में लिखऽ ?
2. कविता में सबद चयन कहाँ तक सटीक हे, ओकरा पर अप्पन विचार दऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. परेम से संबंधित कोई एगो कविता सुनाबऽ।
2. राधा कृष्ण के परेम परक एगो पोस्टर बनावऽ।

सब्दार्थ :

कुच-कुच	—	घनघोर
नियर	—	समान
उमसल	—	मदमातल
रास	—	लीला ।



राजेन्द्र कुमार यौधेय



पिता : श्री नोख नारायण सिंह

जनम : 23 नवम्बर, 1923

जनम-स्थान : ग्राम-नियामतपुर, पो०-घोरहुआँ, भाया-मसौढ़ी (पटना)

सम्पादन : 'नर-नारी' मासिक पत्र में सम्पादन कार्य

पहली किरती परकासित : कविता मासिक **'किशोर'** में (नवम्बर 1943), कहानी साप्ताहिक **'नवशक्ति'** में (18 सितम्बर, 1944)।

सम्मान : डॉ० राम प्रसाद सिंह पुरस्कार से सम्मानित

परकासित रचना :

मगही

1. मगही व्याकरण
2. बिसेसरा (उपन्यास)
3. धर्मपुत्र (प्रबंध काव्य)
4. सुलोचना (प्रबंध काव्य)
5. मानिनी शकुंतला (महाकाव्य)
6. जुग के डाहट (निबंध संगरह)
7. चटके इँजोरिया राग के वन में (कविता संगरह)

हिन्दी

1. गीतार्चना (कविता संग्रह)
2. सहमान (महाकाव्य)
3. स्वधर्म (निबंध संग्रह)

ई कउनो इस्कूली सिच्छा न प्राप्त करलन बलुक स्वाध्याय करके ग्यान अर्जित कइलन। इनकर मगही कविता संगरह के नाम 'टहके इँजोरिया राग के वन में' हे । मगही में इनकर प्रसिद्ध उपन्यास 'बिसेसरा' हेवे, 'मानिनी शंकुतला' आ 'शिखर आ घाटी' इनकर चर्चित महाकाव्य हे ।

ई मुसहर संस्कृति के जबरदस्त चितेरा हथ। 'करिआवा बादर' मुसहर (दलित समुदाय) के चित्रन हे। मुसहरनी के करिया बादर में अप्पन राजा के लाख-लाख सुअर दिखाई पड़ऽ हे। जब बरसा बरस जा हे तऽ ओकर भरम के निवारन हो जाहे। ऊ फल्गु नदी के कछार पर सुअर चरावित, नाचित-गावित अप्पन संगी-साथी संग किल्लोल करित आनंद विभोर हो जाहे ।

करिआवा बादर

घट्टा के ओखा में टुभकइ टिटिहियाँ,
झनकावइ हिरदा के तार ।
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया,
रंगे भेलइ छितीकार ।।

धउगित चढ़ित नब्भे मारित कुदकनिया
पुरबा बयरिया में सब्भे लऽ बहकलइ,
बिजुरी के कोरवा से मारि के हँकवइ,
हुलसल मन रजवा पीछू से लपकलइ ।

बनि गेलइ उड़ी बगुलवा के दलवा
रजवा के गलवा के हार ।।

करिया मुरेठवा के करिया हइ चुनवाँ,
करिया झुलफिया आ करिए सेहरवा;
ई पुरवा लफरवा में फर-फर उड़ऽ हइ,
लउकइ न रजवा के तनिको चेहरवा ।

उड़ि रहलइ झुल्फी से सोंधा सुगंधिया,
बनि गेलइ मद के जुआर ।।

चल चललूँ लेके अब अपनो सुअरिया
मिली सब संगी–साथी बढ़ फल्गु किछरवा,

डोल-पत्ता खेललूँ, पारलूँ झुमरवा,
ई गगने गुँजयलूँ गीत के उचरवा ।

बिच्चे गोल ठार राजा मँदरा बजावइ,
आइ नभ देवतन ठार ।।

रजवा के बधिया हम घटवा के मानलूँ,
गिरलइ फुहरिया तऽ जानलूँ भरमिया;
सतरंग कोरओली उड़िअयलूँ सड़िया,
नेहिया जगा बेधलूँ संगी मरमिया ।

कोरवा के बिमवा घनवा पर उतरल,
दनवा के हरवा हजार ।
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया,
रंगे भेलइ छितीकार ।।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'करिआवा बादर' में कउन समुदाय के चित्रन करल गेल हे ?
   (ख) इहाँ 'सुअर' कउन अरथ में प्रयोग भेल हे ?
   (ग) 'रजवा' सबद के माध्यम से कवि का कहेला चाहइत हे ?
   (घ) सही उत्तर पर ☑ लगावऽ :
   ई कविता में प्रयोग कैल गेल हे :
   (i) छायावाद (ii) रहस्यवाद (iii) प्रगतिवाद ।
   (ङ) कवि के दूगो रचना के नाम बतावऽ ।

लिखित :

1. 'करिआवा' बादर कविता में प्रकृति चित्रन कउन रूप में भेल हे ?
2. ई कविता में प्रकृति के कउन रूप में मानवीकरण प्रस्तुत कयल गेल हे ?

3. निम्नलिखित के आसय लिखऽ :

(क) चल चललूँ लेके अब अपनो सुअरिया
मिली सब संगी-साथी बढ़ फल्गु किछरवा
डोल-पत्ता खेललूँ, पारलूँ भुमरवा;
ई गगने गुँजयलूँ गीत के उचरवा।
बिच्चे गोल ठार राजा मँदरा बजावइ;
आइ नभ देवतन ठार ।।

(ख) निम्नलिखित के व्याख्या करऽ :

रजवा के बधिया हम घटवा के मानलूँ
गिरलइ फुहरिया तऽ जानलूँ भरमिया
सतरंग कोर ओली उड़िअयलूँ सड़िया
नेहिया जगा बेधलूँ संगी मरमिया
कोरवा के बिमवा घनवा पर उतरल
दनवा के हरवा हजार
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया
रंगे भेलइ छितीकार।।

4. 'करिआवा बादर' पढ़ला के बाद तोरा जे संदेस मिलऽ हे, ऊ पत्र के माध्यम से अपन बहिन के बतावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. ई कविता में कउन-कउन बिम्ब तोरा अच्छा लगल ?
2. बादर के माध्यम से कवि के मुख्य भाव का परगट होवऽ हे, बतावऽ ।
3. कवि राजेन्द्र कुमार यौधेय परकिरती के एगो सफल चितेरा हथ एकरा से तू कहाँ तक सहमत हऽ।
4. ई कविता से छंद आउ अलंकार चुन के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) एही तरह के कोई दूगो कविता संगरह करके वर्ग में सुनावऽ।

   (ख) कविता में कवि जे सबद चुनके परयोग कइलन हे ओकरा से तोरा पर का परभाव पड़ल ?

   (ग) राजेन्द्र कुमार यौधेय के 'बिसेसरा' उपन्यास पुस्तकालय इया कहीं से खोज के पढ़ऽ आउ ओकरा में जउन समाज के चित्रन भेल हे, बरनन करऽ (60 सबद में)

सब्दार्थ :

हिरदा	—	हिरदय
घट्टा	—	बादर
ओखा	—	ओट में
टुभकइ	—	बोलइ
टिटिहियाँ	—	पंछी के नाम
कुदकनिया	—	कूदना
बयरिया	—	हवा
सब्भे	—	सब
कोरवा	—	किनारा
हुलसल	—	खुस भेल
पीछू	—	पाछे
सतरंग	—	सात-रंग
छितीकार	—	छितिज में ।

●●●

